राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग वित्त एवं विकास निगम

क्लस्टर हेतु तकनीकी उन्नयन योजना- मोरेगाँव, असम

सफलता की कहानी

योजना का नाम SchemeName	**क्लस्टर हेतु तकनीकी उन्नयन**
क्लस्टर का नाम	**हैण्डलूम वीविंग क्लस्टर**
स्वीकृति का वर्ष	**2018-19**
वितरित राशि	**रू 22.00 लाख**
सदस्यों की सं.	**50**
कार्यान्वयन एजेंसी	**भारतीय उद्यमिता संस्थान (IIE), गुवाहाटी,**

राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग वित्त एवं विकास निगम (NBCFDC) ने अपनी योजना ''क्लस्टर हेतु तकनीकी उन्नयन'' के तहत हथकरघा बुनाई क्लस्टर की 50 महिला सदस्यों के लिए परियोजना को मंजूरी दी है। वित्तीय वर्ष 2018-19 में असम के मोरीगांव जिले में उत्साही बुनकरों को तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए भारतीय उद्यमिता संस्थान (IIE), गुवाहाटी, असम के माध्यम से यह योजना लागू की गई।

क्लस्टर के सदस्य विभिन्न स्वयं सहायता समूहों (एस.एच.जी.) से थे और कुल 50 सेट फ्रेमलूम सहित विभिन्न सामग्री जैसे- जैक्वार्ड मशीन, लूम, एक लकड़ी का फ्रेम और आवश्यक सामान के साथ यार्न अर्थात् धागा सम्मिलित थे, उपलब्ध कराए गए थे।

इस समूह की कई महिलाएं समय की काफी बचत कर रही हैं और नए करघे और सहायक उपकरण प्राप्त करने के बाद अधिक उत्पादन कर रही हैं। पहले एक पारंपरिक अंगौछे में लगभग 10 से 11 दिन लगते थे और नए करघे होने के बाद, कारीगर अधिकतम 2 से 3 दिनों में एक अंगौछे का कार्य पूरा कर लेता हैं। पारंपरिक करघे में बुनाई की परंपरा पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही थी। लेकिन अब अपने खर्चों को पूरा करने और यहां तक कि अपने परिवार की सहायता करने के लिए कुछ कारीगरों ने पैसे कमाने के लिए मेखला चादर बुनना आरंभ किया किन्तु इससे भी अच्छी आय नहीं हो पा रही थी। पहले वे केवल घरेलू उपयोग के लिए उत्पाद बनाने से जुड़े हुए थे, जिसके परिणामस्वरूप इन बुनकरों की आय कम हो गई थी। प्रौद्योगिकी उन्नयन योजना के तहत NBCFDC के हस्तक्षेप के बाद, बुनकरों को उन्नत करघे और सहायक उपकरण प्राप्त हुए। इन उन्नत करघों की मदद से इन लाभार्थियों ने अपने उत्पाद की गुणवत्ता में सुधार किया है और अच्छी आय अर्जित की है। वर्तमान में, इस क्लस्टर के लाभार्थी अपने व्यवसाय से प्रति माह 5000 से 6000 रुपए के बीच कमाते हैं।